पदमावत के आधार पर पद्मिनी का मूल्यांकन

डॉ0 सुशीला शक्तावत

एसो0 प्रोफे0, इतिहास विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

सारांश

भारतीय इतिहास में चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी विशेष रूप से चर्चित रही है। उसे अनुपम सौन्दर्य से युक्त विशिष्ट वीरांगना, असीम साहस, बुद्धि चातुर्य, धैर्य से परिपूर्ण और पतिव्रत धर्म की पालनकर्ता एक सती नारी के रूप में भारतीय जन मानस में स्थान प्राप्त है। उसे लेकर राजस्थानी व हिन्दी में विपुल साहित्य निर्मित हुआ है। ऐसी सती नारी पद्मिनी के अस्तित्व को लेकर विद्वानों में मतभेद है। शोध आलेख में मलिक मुहम्मद जायसी के ग्रंथ ''पद्मावत'' को आधार बनाकर पद्मिनी के व्यक्तित्व व कृतित्व का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्दः *– सिंहलद्वीप, चित्तौड़गढ, पद्मावती, रतनसेन, राघवचेतन, अलाउद्दीन खिलजी, गोरा बादल, देवपाल, कुम्भलमेर, सती, जौहर।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ0 सुशीला शक्तावत, ''पदमावत के आधार पर पद्मिनी का मूल्यांकन'', शोध मंथन जून 2017, पेज सं0 118–129

http://anubooks.com/?page_id=2030

Artcile No.20(SM427)

प्रस्तावना

पदमावत की रचना मलिक मुहम्मद जायसी ने शेरशाह के समय में की थी। मध्यकालीन इतिहास के पुर्ननिर्माण में पदमावत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इस ग्रन्थ को हिन्दी संसार के सामने लाने का श्रेय आचार्य प. रामचन्द्र शुक्ल को है। सन् 1924 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा से उन्होंने पदमावत का पहला संस्करण प्रकाशित किया। पदमावत की रचना 1527 से 1540 के बीच में किसी समय हुई। इस ग्रन्थ का काव्य पक्ष जितना समृद्ध है ऐतिहासिक पक्ष भी उतना ही प्रबल है। पदमावत में पदमावती जन्म खण्ड में सिंहलद्वीप के राजा गंधर्वसेन के यहां उसके जन्म का वर्णन है। छठी पूजन का उत्सव किया गया। जन्म नक्षत्र के अनुसार पदमावती नाम रखा गया। पण्डितों द्वारा बताया गया कि यद्यपि सिंहलद्वीप में इसका अवतार हुआ है, पर जंबूद्वीप पहुंच कर इसकी जीवन लीला समाप्त होगी।

जब वह पांच वर्ष की आयु को प्राप्त हुई, तब धर्म ग्रन्थ देकर उसे पढने बिठाया गया। क्रमशः पदमावती पण्डित और गुणी हो गई।[1] जब पदमावती 12 वर्ष की हुई तब विवाह योग्य पदमावती के लिये पृथक निवास (कुमारी अन्तःपुर) और साथ में रहने के लिये सखियां दी गई। पदमावती का साथी हीरामन तोता था। दोनों एक साथ रहते और वेद शास्त्र पढ़ते थे। पदमावती को सुग्गे की सीख से राजा को क्रोध आ जाता है, और उसके वध की आज्ञा दी जाती है। पद्मावती उसे धैर्य बंधाती है फिर भी सुग्गा एक दिन पदमावती की अनुपस्थिति में वनखण्ड को उड़ जाता है। जब इसका पता पद्मावती को लगता है तो वह दुखी हो जाती है।[2]

रत्नसेन जन्म खण्ड में उल्लेख है कि चित्रसेन चित्तौड़गढ का राजा था उसके कुल में रत्नसेन का जन्म हुआ। पण्डितों ने उस बालक का रूप देखकर भविष्यवाणी की कि रत्नसेन जिसने इस कुल में अवतार लिया है रत्न है। उत्तम पदार्थ (पद्मावती रूपी हीरे) के साथ इसकी जोग लिखी है। इनके मिलने से चांद और सूर्य जैसा उजाला हेागा। मालती के लिये जैसे भौरा वियोगी बनता है, वैसे ही वह उसके लिये जोगी बनेगा। सिंहलद्वीप मे जाकर यह उसे प्राप्त करेगा और सिद्ध बनकर उसे चित्तौड़ ले आवेगा। वह राजा भोज के जैसा भोग भोगेगा और विक्रम ने जैसा साका किया वैसा पराक्रम करेगा। उस रत्न रूपी बालक को परखकर पारखी ज्योतिषियों ने ये सब लक्षण लिख दिए।[3]

बनिजारा खण्ड में बताया गया है कि व्यापार के लिये चित्तौड़ के बंजारे सिहंल जाते हैं साथ में एक निर्धन ब्राह्मण भी व्यापार हेतू जाता है वहां से ब्राह्मण शिकारी से सुग्गा का खरीदकर चित्तौड़ लोटता है। चित्तौड़ में तब रत्नसेन का राज्य था। रत्नसेन को सिंहल के बाजार से लाए हुए ज्ञानी सुग्गे के बारे में जानकारी मिलती है। तब वह जिज्ञासावश ब्राह्मण और सुग्गे को बुलवाती है। सुग्गा राजा को आर्शीवाद देता है और कहता है कि मैं सिंहल की पद्मावती का हीरामन हूं। ब्राह्मण से एक लाख मूल्य में रत्नसेन द्वारा सुग्गा मोल लिया जाता है और राज मंदिर में उससे कथाएं सुनना का वर्णन किया गया है।[4]

राजा सुआ संवाद खण्ड में उल्लेख है कि सुग्गे द्वारा सिंहल का वर्णन करते हुए पद्मावती के सौन्दर्य की प्रशंसा करना और उसे सुनकर रत्नसेन में प्रेम उत्कंठा जाग्रत होती है

और सुग्गा प्रेम की कठिनाईयों का वर्णन करता है। प्रेम के मार्ग में अपनी दृढ निष्ठा प्रकट करते हुए राजा का पद्मावती के नख शिख श्रृंगार के विषय में प्रश्न करता है, हीरामन द्वारा नख शिख श्रृंगार सुनकर रत्नसेन मूर्च्छित हो जाता है, राज त्याग कर राजा का जोगी के वेश में पद्मावती के लिये सेना के साथ सिंगी बजाकर सिंहल प्रस्थान करता है। दंडकवन और विन्ध्यवन में पहुंचकर साथियों को सावधान करता है। सुग्गा अगुआ बनकर मार्ग बताता है। रत्नसेन साथियों सहित मृगारण्य और उससे आगे की यात्रा करता है। समुद्र के घाट पर पहुंचकर रत्नसेन को उड़ीसा का राजा गजपति का निमन्त्रण और रत्नसेन द्वारा उसका आतिथ्य अस्वीकार करके जहाज देने की प्रार्थना करता है। गजपति समुद्र यात्रा की कठिनाई बताते हुए जहाज देने की स्वीकृति प्रदान करता है। गजपति से जहाज पाकर राजा सिंहल के लिए प्रस्थान करता है। समुद्री मार्ग में आई कठिनाईयों का वर्णन किया गया है। मार्ग में आने वाले वाले सात समुद्रो का उल्लेख है। सातवें मानसर नामक समुद्र में पहुंचकर सब प्रसन्न होते है।[5]

सिंहलद्वीप में पहुंचने के बाद हीरामन की पद्मावती से भेंट होती है और पद्मावती प्रसन्न होती है, पद्मावती के प्रश्न के उत्तर में सुग्गे का चित्तौड की यात्रा तक का अपना सब हाल कहता है, सुग्गे द्वारा रत्नसेन तक पहुंचने और उससे पद्मावती के रूप वर्णन का हाल बताना, फिर रत्नसेन के जोगी होकर घर छोड़ने और महादेव के मंडप में आ पहुंचने का हाल कहता है, सुनकर पद्मावती की प्रतिक्रिया कि तपाने और कसने से ही कंचन की परख होती है। सुग्गे का पद्मावती को विश्वास दिलाना कि रत्नसेन की विरहाग्नि सच्ची हैं, हीरामन का रानी से विदा लेना, लोटकर सुग्गे का रत्नसेन को पद्मावती का संदेश सुनाता है कि तुमारा प्रणय निवेदन स्वीकार लिया है। आदि घटनाक्रमों का विवरण पद्मावती सुआ भेट खण्ड में मिलता है।[6]

गंधर्वसेन द्वारा रत्नसेन और पद्मावती का विवाह करवाया जाता है। उधर रत्नसेन की रानी नागमति और माता चित्तौड़ में रत्नसेन के वियोग में दुखी होती है। रत्नसेन पद्मावती को लेकर चित्तौड़ पहुंचता है। नागमति और पद्मावती मे नारी सूलभ सौतिये डाह का भी वर्णन मिलता है।[7]

पदमावत के राघव चेतन देश निकाला खण्ड में घटनाक्रम इस प्रकार दिया गया है– राघव चेतन रत्नसेन के दरबार में राजा का कृपापात्र बन जाता है। दोयज तिथि के विषय में राघवचेतन और पंडितों में मतभेद पंडितों की बात का सच उतरना, राजा का रूष्ट होकर राघव चेतन को देश निकाला दे दिया जाता है।

पद्मावती ने जब सुना कि गुनी राघव चित्तौड़ छोड़कर जा रहा है उसने सब बातों का ध्यान करके भविष्य सोचा राजा ने यह अच्छा नहीं किया जो ऐसे गुणी को देश निकाला दिया। कही यह मूर्खतावश कोई अमुक बात अपने मुंह से न कह दे। यश तो बहुत परिश्रम से मिलता हैं, किन्तु अपयश थोड़ी बात से ही हो जाता हैं। यह सोचकर उसने शीघ्र ही राघव चेतन को बुला भेजा और कहलाया सूर्य ग्रह का कष्ट हुआ था। आकर उसकी पूजा (उतार) लो। ब्राह्मण को जहां दक्षिणा मिलने वाली हो तो वह उसके लिये बुलाने से स्वर्ग भी जा सकता हैं। राघव चेतन महल के पास आया; जैसे ही पद्मावती झरोखे में आई, उसी क्षण राघव ने आर्शीवाद दिया, चकोर

जैसे चन्द्रमा को देखता है वैसे वह उसका मुंह देखने लगा। वह हाथों में कंगन की जोड़ी पहने थी, उनमे से एक कंगन उतारकर फेंक देती है। राघव चेतन, पद्मिनी के रूपदर्शन से व्याकुल हो जाता है। होश आने के पश्चात् वह दिल्ली अलाउद्दीन खिलजी के पास जाने व दूसरा कंगन प्राप्त करने का निश्चय करता है ताकि दरिद्रता दूर की जा सके। अलाउद्दीन को पदमावती के रूप की बात पहुँचाने का निश्चय करता है, ताकि उसे प्राप्त करने के लिये अलाउद्दीन रत्नसेन के राज्य पर आक्रमण करेगा और वह अपने अपमान का बदला ले सकेगा।[8]

राघवचेतन दिल्ली गमन खण्ड में उल्लेख है कि राघव चेतन दिल्ली में जाकर अलाउद्दीन खिलजी से मिलता है। वहां वह पद्मावती की रूप चर्चा चलाता है, अलाउद्दीन खिलजी का कथन कि पद्मिनी स्त्रियां उसके राजमन्दिर से बाहर संभव नहीं, राघव कहता है कि यहां पद्मिनी कोई नहीं।[9] राघवचेतन पद्मिनी स्त्री का वर्णन करता है। देव ने उसे पद्म की गंध से संवारा है। पद्मिनी जाति की उस स्त्री में पद्म का रंग होता है। न बहुत लम्बी, न बहुत छोटी न बहुत पतली, न बहुत मोटी होती है। जिसका शरीर चन्द्र की सोलह कलाओं के सौन्दर्य से बना हो, है सुल्तान, उसे पद्मिनी समझना चाहिए, उसके शरीर की अंगों में चार दीर्घ, चार लघु, चार भरे हुए और चार पतले होते है। उसकी मुख छवि सोलह कलाओं से सम्पूर्ण चन्द्रमा के समान होती है। उसके अंग अंग सोलह श्रृंगारों से अलंकृत होते है। संसार जैसे उसका वर्णन करता है, वैसे ही मैं भी कहता हूं। सर्वप्रथम उसके सिर पर बाल लम्बे होते है और हाथों में लम्बी अंगुलियों भी सुन्दर लगती है। अपने दीर्घ नेत्रो से वह तिरछी चितवन से देखती है। उसकी ग्रीवा दीर्घ होती है। कण्ठ में तीन रेखाएं दिखाई पड़ती है। उसके छोटे दांत हीरे जैसे चमकते है। उसका कम चौडा ललाट दोयज के चन्द्रमा की भांति चमकता है। उसकी नाभि कम गहरी होती है जिसमें से चन्दन की सुगन्धि आती है। उसकी नाक तलवार की धार के समान पतली होती है। उसकी क्षीण कटि से सिंहनी भी हार मानती है। उसका पेट ऐसा पतला होता है मानों उसमें आंत न हो। उसका अधर पतला और मूंगे के रंग सा लाल होता है। उसके भरे हुए गाल मुख को शोभा देते है। उसकी भुजाओं की कलाई चौड़ी होती है। यह जो पद्मिनी चित्तौड़ में लाई गई है, उसकी काया बारह बानी कुन्दन जैसी शुद्ध और चमकीली है। कुन्दन सोने में न गन्ध होती है न वास। पर वह ऐसी गन्ध वाली है, मानो कमल खिला हो। सूर्य प्रभा की जैसी निर्मल कला होती है, ऐसी ही उसके शरीर की आभा है। उसके सामने देखा नहीं जाता, देखने से आंखों में पानी भर आता है। उसकी बातों में पान और फूल जैसी मिठास है। कंठ से निकले हुए वचन शारदा को मोह लेते है। उसकी जिव्हा के सामने सरस्वती की क्या गिनती है। इन्द्र, चन्द्र, सूर्य देवता और सारा जगत उसके वचनों की इच्छा करता है। अब उसके कानों का वर्णन सुनो जो कुंदन की सुनहली सीपी के समान शोभित है। वे सिंहल द्वीपी कुंडल पहिने है। वेद पुराणों के जितने ग्रंथ है सब उसने सुनकर सीख लिये है। नाद का आनन्द और रागो के रस का अनुभव करने वाले श्रवण विधाता ने उसे दिये है।[10]

जब राघव ने अलाउद्दीन को पद्मिनी का वर्णन सुनाया, तो उसे सुनकर अलाउद्दीन ने चित्तौड़ जाकर पद्मिनी को पाने का निश्चय किया। राघव को शाह ने पान और सरोपा दिया। दस नर हाथी और सौ घोड़े भी उसे मिले। और दूसरी कंगन की जोड़ी दी। उसमें तीस करोड़

मूल्य के रत्न लगे हुए थे। शाह ने उसे एक लाख दीनारे आजीविका के लिये दी, मानो समुद्र की सेवा करने से राघव का दारिद्रय दूर हो गया। शाह ने कहा जिस दिन मैं पद्मिनी पाऊंगा उस दिन, हे राघव तुझे चित्तौड के सिंहासन पर बैठा दूंगा। पहले पांचों रत्नों को मुट्ठी में करके फिर उस नग को प्राप्त करूंगा, जो हाथ की शोभा के लिये सोने की अंगुठी में जड़ने योग्य है। सरजा बलवान पुरूष सिंह था। सांपो का चाबुक लिये सिंह पर सवार रहता था। शाह ने उसे पत्र लिखकर दिया और शीघ्र भेजा। वह चित्तौडगढ में राजा के पास आया। उसने वह पत्र जाकर राजा को दिया। उसमें अनेक प्रकार की कृपा लिखकर लिखा था, सिंहल की जो पद्मिनी तुम्हारे पास है, उसे मैं शीघ्र यहां चाहता हूं। पत्र मे ऐसा लिखा हुआ सुनकर राजा रत्नसेन क्रोध में जल उठा, यदि वह चक्रवती है तो राज्य उसका है, किन्तुअपना घर प्रत्येक के लिये अपना वैभव है। रत्नसेन सरजा से कहता है– तेरा जो सूर है वह मेरी दृष्टि में अंगारा है। मुझे उससे क्या? मैं स्वयं वह सूर्य हूं जिसकी स्वर्ग से पाताल तक गति है। सरजा रत्नसेन से कहता है राजा क्रोध से ऐसा लाल नहीं हुआ जाता। सुनकर ठंडे रहो, जलकर बाते न कहो। बादशाह के लिये ऐसा न बोलो, यदि वह चढ़ आयेगा तो जगत में हलचल मच जाएगी। उसके सामने क्या बड़ा बोल बोलते हो? क्यों अपने चित्तौड में राजा बनकर नहीं बैठे रहते। ऊपर से चंदेरी का किला भी ले लों। एक दासी के समान पद्मिनी क्या है। रत्नसेन कहता है यदि घर की गृहिणी ही चली गई तो फिर क्या चित्तौड़ और किस काम की चंदेरी। क्या मैं रणथम्भौर का राजा हम्मीर हूं। उसने अपना माथा काटकर शरीर दे दिया था। मैं तो रत्नसेन साका करने वाला हूं, जिसने पत्र में कृपा की वैसी बाते लिखी है, वह शाह भी हृदय का ओछा न होगा। यदि वह द्रव्य ले ले तो मुझे स्वीकार है। मैं पैर पकड़ कर उसकी सेवा करूंगा। किन्तु यदि वह पद्मिनी स्त्री चाहता है तो सिंहलद्वीप जाये।[11]

सरजा ने कहा है राजा अपने आपको इस प्रकार बड़ा जताकर न बोलो शाह ने उदयगिरी पर अधिकार कर लिया और देवगिरी जीतकर वहां की राजकुमारी छिताई ले ली। वस्तुतः सब कुछ उसी शाह का है, तुम्हारा कुछ नहीं। रत्नसिंह प्रत्युत्तर मे कहता है कि पुरूक से जाकर कहो कि कि वह मरने के लिये न दौड़े नही तो उसकी भी सिकन्दर जैसी गति होगी।[12]

सरजा लौटकर आया उसने अलाउद्दीन को बताया कि रत्नसेन नही मानता, सुनकर अलाउद्दीन चित्तौड़ अभियान का निर्णय लेता है। जितने अमीर, उमरा थे सबको शीघ्र बुलाया गया। जैसे ही युद्ध के बड़े नक्कारे पर डंडे की चोट पडी धरती हिल गई। पहला पड़ाव दिल्ली से तीस कोस पर हुआ। हाथी, घोडे, पैदल, सामान और जितने खच्चर और ऊंट थे। वे अनेक स्थानों में सज्जित हुए और कटक मे मिलने के लिये शरभ मृगों के झुंड की तरह छूटे। सुल्तान की घुड़सवार सेना मार्ग में चली, उसमें तेज और बांके केकाण देश के घोडे थे और भी काले, मुम्मेत लीले, सनेबी, खंग कुरंग, बोर, दुर, केबी घोड़े उसमे चले। कुछ उनमें मुश्की, दुरमुखी और इराक देश के घोड़े थे। वहां तुर्की घोड़ो में बुलाकी (काले–सफेद) श्रेष्ठ घोड़े थे।[13] लोहे की शूलो से ढके हुए हाथी मेघ समूह के समान गरजते हुए आए। उस समय के जो प्रसिद्ध उमरा और मीर थे, वे सुल्तान की सहायता के लिये चले। सातो द्वीप और नवों खण्डों के लोग एक ही संग्राम भूमि में आकर इकट्ठे हो गए।[14]

सात–सात योजन का एक–एक कूच होता था। सेना का अगला भाग जहां से कूच करता था, उसका पिछला भाग कूच के अंत में वही आकर लगता था।

शाही सेना के कूच करने से जितने गढ और गढपति थे, सब कांप उठे और पत्ते की तरह हिलने लगे। नब्बे लाख सवारो के साथ उसने चढाई की।[15] दूतो ने राजा से आकर कहां कि तुर्क सेना लेकर चढाई करता चला आ रहा है, राजा ने जब यह सूना तो उसने जितने हिन्दू राजा थे, सबके पास तुरन्त पत्र लेकर दूत दौड़ाये।[16] जो राय अलाउद्दीन की सेवा करते थे उनके पास भी चित्तौड का भेजा हुआ संदेशवाहक पहुंचा। सबने एक मत होकर कूच किया और अलाउद्दीन को प्रणाम किया उन्होने कहां चित्तौड़ हिन्दुओं की माता है। उस पर जब विपति आती है तो उससे सम्बन्ध नहीं तोड़ा जाता। रत्नसेन ने जौहर की तैयारी की है। वह हिन्दूओं के बीच में सबसे बड़ा राजा है। राजाओं ने बहुत ही युक्ति पूर्ण ढंग से अलाउद्दीन से यह संकेत किया कि यदि वह कृपा करके पद्मावती की ओर से अपना मन फैर ले तो उसकी षीतल वायु से वह युद्ध ही समाप्त हो जाये और फिर उन्हें पतिंगे की तरह जाने की आवष्यकता न रहे। यदि ऐसा नही तो फिर षाह उन्हें प्रसन्नता से विदा करे जिससे वे जाकर चित्तौड़ की ओर से लड़ सके। सुल्तान ने हंसकर उन्हे बीड़ा दिया और कहा कि तीन दिन का बीच देकर वे वहां आवें। जिन्हें आग में मरना ही है, उन्हें कौन शीतल कर सकता है।[17]

रत्नसेन ने चित्तौड़ में सब तैयारी कर रखी थी। वहीं युद्ध के बाजे बजाकर आते हुए सब राजा एकत्र होने लगे। तोमर, बैस पंवार (परमार) गुहिलौत, खत्री पंचयान, बघेले, अगरवार, चौहान, चन्देल, गहड़वाल, प्रतिहार सबने आकर राजा को जूहार किया। चित्तौड़गढ में इस प्रकार का सामान का संचय किया गया था कि जो चाहिए वहीं वहां था। बीस बरस तक भी युद्ध चले तो भी सामान की कमी न हो। परकोटे के एक–एक भाग में चोखण्डे बूर्ज बनाए गए थे, जिनके ऊपर विकट गोलों की तोपे रखी गई थी। गढ में सब और की भूमि राजाओं ने बांटकर अपनी रक्षा में ले ली। इतना भी स्थान बीच में अरक्षित न रहा जो चींटी भी निकल सके। हर एक कंगुरे के पीछे धनुर्धर योद्धाओं ने अपना–अपना स्थान ले लिया।[18]

अलाउद्दीन की सेना मे तोपे है। शत्रुशाल और गढ़भंजन जैसे नामों वाली उन भारी तोपों से पूरी धरती हिलायमान है। इस प्रकार अलाउद्दीन सेना सहित चित्तौड आ पहुंचा। राजा रत्नसेन नेकहां जो हमें करना था वह सब किया। अब तो और कुछ सूझता नही केवल जैसे मरना ही सूझता है। जहां तक हमारा राज है सब सज्जित हो जाओ। राजा की ऐसी आज्ञा पाकर उसी क्षण सब सामान सजाया जाने लगा। अश्व दल और गज दल दोनों सज्जित हुए।[19]

इधर राजा ने ऐसी तैयारी की ही थी कि उधर षाह की अवाई हुई सेना की अगली टुकडी दौड़ती हुई पहले पहुंच गई। शाह दिल्ली से चलकर माण्डलगढ आ पहुंचा उसके साथ 20 हजार हाथियों का ठाठ था। निकट आने पर दोनों दल गरजने लगे। हिन्दू और तुर्क दोनो साथ आ पहुंचे। ऐसा संग्राम हुआ जैसा पहले कभी न हुआ था। रत्नसेन ने निश्चय किया कि मैदानी युद्ध की अपेक्षा दुर्ग में रहकर युद्ध करना उचित होगा। रात को दुर्ग से अलाउद्दीन की सेना पर जलती हुई मशाले फैकी जा रही थी। उसकी सेना रात्रि में विश्राम न कर सकी। दिन निकलने पर शाही

सेना द्वारा निरन्तर बाण वर्षा की गई। युद्ध के बीच में ही राजा रत्नसेन द्वारा अलाउद्दीन की सेना को उनकी मौजूदगी की बेपरवाही बताने के लिये पातुरी नृत्य के लिये अखाडे का आयोजन और विविध प्रकार के वाद्य वादन करवाये गये। नृत्य करती हुई पातुर को अलाउद्दीन के शिविर से जो नीचे था नीचे से बाण मारकर गिरा दिया गया। शाही सेना द्वारा गढ़ को चारों ओर से घेर कर बांध बांदा जाता है। राजा रत्नसेन द्वारा इस अवसर पर सभा सदो से मंत्रणा करके जौहर करने का निष्चय किया जाने का वर्णन मिलता है।[20]

आठ बरस तक गढ घिरा रहा। अलाउद्दीन सरजा से कहता है कि मैं रत्नसेन को पान बीड़ा देकर बेधूंगा (सम्मान देकर परास्त करूंगा) षाह ने सरजा से यह भेद कहा कि जिस युक्ति से राजा पलट जाये और अब भी सेवा मान ले। उससे जाकर कहो कि अब उससे पद्मिनी नहीं लूंगा? यद्यपि गढ़ का चूरा कर चुका हूं पर उसे भी छोड़ दूंगा। अपने देश का निश्चल होकर उपभोग करे और साथ में चंदेरी भी ले लो। पांचों रत्न मुझे दे दो। अलाउद्दीन सरजा को रत्नसेन से संधि की बातचीत के लिये भेजता है, वह पांच रत्न देकर संधि कर लेने के लिये सरजा का सुझाव मानकर अपने दूतों को पांच रत्नों सहित सरजा के साथ अलाउद्दीन के पास भेजता है।[21] दूतों से अलाउद्दीन के गढ में आने की बात जानकर राजा द्वारा शाही भोज की तैयारी की जाती है। अलाउद्दीन प्रातः काल गढ देखने आया साथ में सुरजा और राघव चेतन को भी लाया था। षाह ने गढ़ पर चढकर गढ की बस्ती देखी। उस का बैठने का स्थान जहां रखा गया था वहां से पद्मावती का महल दर्पण में दिखाई देता था।

गढ में नाच गाने का प्रबन्ध था। गोरा और बादल राजा के पास में थे उन्होंने रत्नसेन के कान में कहा, हमने वाणी से परीक्षा करके जान लिया है कि तुर्क प्रकट में मेल और गुप्त रूप से वह सेना की बात सोचता है। तुम तुर्को से मेल मत डरो। अन्त के दांव मे वे अवष्य छल करते है। षत्रु कांटे के समान कठिन और कुटिल होता है। राजा को यह बात सुनकर मन मे अच्छी न लगी। हे भाई, जहा मेल है वहा ऐसा नही होता है और राजा ने जो नमक (सुन्दर व्यवहार) की बात सुनाई वह उन दोनों को घाव पर नमक के समान लगी। वे क्रोध से भरे अपने भवन को लौट आए।[22] अलाउद्दीन को भोजन परोसने के लिये चौरासी दासिया भेजी गई। राघवचेतन द्वारा अलाउद्दीन को संकेत दिया गया कि इनमें वह पद्मिनी स्त्री नही है। ज्योंनार के पश्चात् अमूल्य रत्न सौ थालों में भरकर राजा ने शाह की सेवा में रखे। राजा ने षाह के गले मे पगड़ी डालकर विनती की, हे जगत के सूर्य मैं आपसे रक्षा चाहता हूं। विनती सुनकर सुल्तान हंसा और कहा कि है राजा चित्तौड के अतिरिक्त माण्डलगढ भी तुझे दूंगा।[23]

शाह की कृपा देखकर राजा प्रसन्न हुआ। फिर शाह ने शतरंज का खेल सजाया। तभी सखियों के कहने पर पद्मावती झरोखे मे जाती है, उसकी परछाई दर्पण में देखकर सुल्तान बेहोश हो जाता है (शह मात हो गई) और खेल समाप्त कर दिया गया। राजा यह छिपा हुआ भेद नही जान पाया राघवचेतन ने कहा शाह को सुपारी लग गई है।[24]

प्रातः काल होते ही शाह ने तुरन्त विमान मंगवाया। राजा रत्नसेन धोखे में आकर वह उसे पहुंचाने के लिये साथ चला। शाह ने राजा से बड़ा स्नेह प्रकट किया और बातों में लगाकर

उसका कंधा हाथ से पकड़ लिया। घी और शहद मिलाकर उसने वह रस दिया जो मुह में मीठा था पर पेट में पहुंचने पर विषतुल्य घातक था। उसने राजा को बंदी बनाकर और अपने यहा लाकर लोहे की हथकड़ी बेड़ी पहना दी और कठघरे में डाल दिया गया। समाचार सुनकर चित्तौड़ में भगदड़ मच गई।[25]

बादशाह दिल्ली पहुंचकर सुख से सिंहासन पर बैठा रत्नसेन को भी दिल्ली लाया गया। कारागृह मे जल्लादो द्वारा रत्नसेन को बहुत कष्ट दिये गये और कहा गया कि यदि कष्टो से छुटकारा पाना चाहे तो अब भी पद्मिनी देना स्वीकार करले। राजा रत्नसेन ने कुछ उत्तर न दिया। उसने चुप्पी साध ली और मृत्यु के लिये मन को तैयार कर लिया। प्रतिदिन उठने पर उसकी देह मे नौ निशान दागे जाते थे। कोठरी में बिच्छु और सांप डाल दिये गये। रात दिन यातना का भारी अपमान सहना पड़ा।[26] पद्मावती अपने स्वामी के बिना ऐसे दुखी हुई जैसे कमल की वेल जल के बिना सुखने लगती है।[27]

कुंभलनेर का राय देवपाल रत्नसेन का षत्रु था। उसके हृदय में राजा से बदला लेने का विचार आया, उसने एक बुढी दूती को चित्तौड भेजा कि वह छल बल से पद्मिनी को उसके पास ले आये। दूती पद्मिनी को पथभ्रमित करने का प्रयास करती है किन्तु पद्मावती दूती को फटकारती है कि तू मेरे मुंह पर कालिख पोतने आई है। पद्मावती के आंख से संकेत देते ही सौ दासिया दौड़ पड़ी और उस को ऐसे कुटा जैस सिल को रहा दिया हो। कान नाक काटकर मुंह पर स्याही पौत दी और अतिक्रोध से उसे निकालकर राजद्वार से बाहर कर दिया।[28]

पद्मिनी अपने पति को कारागार से छुटकारा दिलाने के लिये धर्मशाला खोलती है, जितने परदेशी चलकर आते थे उन्हें अनुदान मिलता था और भोजन पानी दिया जाता था। वह आने जाने वालो से पूछती थी कि कोई बटोही उसका समाचार जानता है, जब यह बात अलाउद्दीन तक पहुंची तो उसने एक पातुर को जोगिन बना पद्मावती के पास चित्तौड भेजा और कहा तू उसे विरह में वियोगिनी बनाकर शीघ्र ले आ। वह भिक्षा मांगते हुए राजद्वार तक चली आई। दासियों ने यह बात भीतर रानी से कही, वह जोगिन इस प्रकार भीख के लिये टेरती है जैसे पति से बिछुडी हुई वियोगिनी हो। सुनकर पद्मावती ने उसे भीतर राजमंदिर में बुलवाया और पूछा किस कारण ऐसी वियोग दशा बन गई है? उसने कहा– मेरा प्रियतम परदेश चला गया है, उसी कारण मैने जोगिन का वेश ले लिया। पति को जगह–जगह ढूंढा दिल्ली में सुल्तान के बन्दीगृह भी देखा वहा राजा रत्नसेन को वहां बंधन में देखा। वह बाला कैसे जीती होगी जिसका प्रियतम इस प्रकार बंदी है। पद्मावती ने जब पति को बंदीगृह में सुना, मानो दुख की आग मे घी पड़ गया। वह जोगिन बनकर उसके साथ चलने को उद्यत हो जाती है। लेकिन सखिया समझाने लगी कि केवल रूप भरने से प्रियतम नही प्राप्त किया जा सकता। इसके बजाय गोरा बादल के पास जाकर आश्वासन प्राप्त करो।[29]

पद्मिनी गोरा–बादल के घर गई। वहां जाकर पद्मावती ने रो–रोकर सब समाचार सुनाया। हे गोरा बादल तुम दोनों इस राज्य के स्तंभ हो। युद्ध में जैसे तुम हो और कोई नही है। जहां वे प्रियतम बंधन में पडे है अब जोगिन हो वही दौड़कर जाउंगी। मैं स्वयं बंदीगृह में पड़कर

प्रिय को बंधन से छुडाऊंगी इस प्रकार पद्मावती रत्नसेन को छुडाने के लिये अपनी योजना बना चुकी थी।[30]

गोरा बादल दोनो ही रानी की व्यथा सुनकर पसीज गए। वे रोने लगे और रूधिर के आंसुओ से सिर से पैर तक भीग गए। हम राजा से इसलिए तो कुपित हो गए थे कि तुम मेल न करो, इस तुर्क को पकड़ लो। राजा के जिस विचार को सुनकर हम कुपित होकर चले आए थे, अन्त में उसका फल हमारे ही मत्थे पड़ा। जब तक यह जीवन है कभी द्रोह का विचार नही कर सकते। है रानी, स्वामी के जीते जी तुम जोगिन कैसे बनोगी। यह सुनकर रानी ने कहा है बादल और गोरा यह बीड़ा स्वीकार करो। तुम्हारी इस जोड़ी की उपमा किससे दू। तुम जैसे सामंतो की तुलना में और कोई नहीं है। तुम दोनों अंगद और हनुमान के तुल्य हो। है बादल और गोरा जब तुम मेरे हो तब मैं बंधन छुडाने के लिये और किसका मुंह देखूंगी। गोरा और बादल ने बीड़ा ले लिया। पद्मिनी सखियो सहित वापस महलो मे आ गई।[31] बादल की माता यशोवती कहती है कि आज तेरा गौना आने वाला है, तू अपने घर पर ही सुख भोग मेरे बादलराय तू अभी बालक है। तू क्या जाने युद्ध करने वाले बांकुडे कैसे होते है। बादल कहता है कि है माता तू मुझे निरा बालक मत जान। मैं बादल रण में गरजने वाला सिंह हूं। मैं पाताल में भी प्रवेष करके राजा को छुडाऊंगा।

बादल ने युद्ध यात्रा की तैयारी की, वैसे ही उसका गौना घर आ पहुंचा। उसकी पत्नी भी कहती है कि आज रण में मत जाओ। बादल कहता है जब तक राजा छुट कर नही आता, तब तक मुझे वीर रस अच्छा लगता है, श्रृंगार नहीं।[32]

बादल और गोरा बैठकर सलाह करने लगे उन्होने सोलह सौ चंडोल तैयार कराए और उनमें राजपूत सरदारों को शस्त्र सज्जित करके बैठाया। फिर पदमावती के लिये विमान तैयार कराया, किन्तु उसके भीतर एक लौहार बैठाया गया। विमान रचकर ठीक वैसे ही सजाकर तैयार किया गया। जैसा पद्मावती का था। सब लोग चारों और हाथों से चंवर ढालने लगे। सबको तैयार करके चंडोल रवाना किये गए। बलवान गोरा बादल साथ हो लिए। वे यह कहते हुए चले कि पद्मावती जा रही है साथ में उसकी 1600 सखिया चल रही है।[33]

राजा बन्दीगृह में जिसकी सुपर्दगी में था, गोरा पहले से ही उसके पास पहुंचा उसे दस लाख के भेंट दी। फिर गोरा ने विनती की बादशाह के पास जाकर ऐसी विनती करो। अभी रानी पद्मावती आई है। वह विनती करती है कि मैं दिल्ली में आ पहूंची हूं। चित्तौड के दुर्ग को कुंजी मेरे साथ है। एक घड़ी के लिये यदि आपकी आज्ञा मिल जाये तो उसे राजा को सौप कर आपके महल में आ जाऊ। तुम बादशाह के सामने इस प्रकार निवेदन करो। यह एक बात मुझे मांगे दो। सुल्तानी रखवाले ने घूस लेकर चंडोलो की तलाशी नही ली और जाकर अलाउद्दीन को पद्मावती के सखियो सहित आने का संदेश देता है। शाह की आज्ञा हुई अच्छा एक घड़ी के लिये राजा के पास हो आओ। इस प्रकार गोरा और बादल रत्नसेन को बंदीगृह से मुक्त कराकर चित्तौड़ की ओर चले।[34] अलाउद्दीन सेना सहित पीछा करता है। बादल, गोरा से राजा को लेकर आगे बढने को कहता है। तब गोरा बादल से गले लगाकर मिलता है और कहता है कि बादल तु राजा को

लेकर चल मैने अब पूरी आयु प्राप्त कर ली है और खूब भोग भी भोग लिया है। यदि आयु समाप्त हो जायेगी तो क्या पछतावा है। यह कहकर गोरा ने एक हजार सरदार अपने साथ ले लिए और शेष बादल के साथ कर दिए। सबने मिलकर पहला हमला किया और सुल्तान की आती हुई सेना को ललकार सब उससे भिड़ गए। गोरा के साथ सब जुझ गये। गोरा को शाही सेना ने घेर लिया पर वह शेर की तरह दहाड़ा ऐ तुर्को तुमने रत्नसेन को पकड़ लिया। इससे गोरा के मुह में कालिख लग गई। जब तक रक्त से उसे न धोऊंगा तब तक चैन नही लूंगा। वीर सरजा, ने हमजा अली की मदद से गोरा को मारने मे सफल हुआ। गोरा ने वीरतापूर्वक उनका सामना किया।[35]

बादल राजा को लेकर बढ़ गया और चित्तौड के निकट पहुंच गया। राजमन्दिर में सिंहासन सजाया गया और नगर में बधाई के बाजे बजने लगे। पद्मावती ने सखी सहेलियों के साथ जाकर सिन्दुर फूल और ताम्बूल से प्रियतम के दोनो चरणों की पूजा की। रानी पद्मावती ने राजा के चरण स्पर्श के पश्चात् बादल की आरती उतारी उसने बादल के भुजदंडो की पूजा की। फिर उसके घोडे के पिछले पैर, अगले हाथ और सिर दबाया। तब वह बोली गर्व के साथ यह मेरा हाथी के समान चलना, है बादल, है गोरा तुमने ही रक्खा। तुम्हारे कारण ही राजा चित्तौड़ में प्रविष्ट हो पाए।[36]

रत्नसेन ने बन्दीगृह में उठाई गई यातनाओं के बारे में पद्मावती को बताया। पद्मावती कहती है मै तो स्वयं ही इस पछतावे से नितान्त मरी हुई हूं कि प्रियतम के साथ बंदीगृह मे नही गई। उसके बाद देवपाल की दूतीवाला प्रसंग भी बताती है जिसे सुनकर रत्नसेन बहुत दुखी होता है रात भर सौ नही पाता। प्रातः काल होते ही कुंभलमेर की और प्रस्थान करता है। देवपाल और दोनों के बीच युद्ध होता है। देवपाल सांगी फेककर उसे घायल कर देता है। रत्न सेन भी उस पर प्रहार कर गर्दन धड़ से अलग कर देता है। यद्यपि वह जीवित लोटा पर उसका आयु बल क्षीण हो चुका था। हथियार के घाव ने उसे घर दबोचा। उस दिन के बाद राजा के शरीर मे तब तक सांस चलती रही जब तक उसके जीवन की अवधि थी। अपने पीछे उसने दूर्ग बादल को सौंप दिया।[37] पद्मावती और नागमति दोनो रत्नसेन के साथ सती हो गई। जब तक वे पति के साथ सती हुई तब तक बादशाह ने आकर दुर्ग घेर लिया। पर तब वह अवसर पूरा होकर बीत चुका था। राम और सीता अदृश्य हो चुके थे। शाह ने पहुंच कर उस वीरता का सब हाल सुना। रात दिन उसने जिसे रोका था, वही हो गया था। उसने एक मुट्ठी राख उठा ली और यह पृथ्वी झूठी है कहते हुए हवा में उड़ा दी। जब तक मनुश्य को ऊपर धूल नही पडती तब तक उसकी तृष्णा का अन्त नही होता। तब सारी सेना ने मिट्टी खोदी और जहां जहां गढ़ के चारो ओर घाटी थी उस पर पुल बांध दिया। फिर शाह की सेना का धावा हुआ और असुझ युद्ध हुआ। बादल आगे बढकर दुर्ग की पौर में लड़ता हुआ जूझ गया। स्त्रियों से जौहर कर लिया। पुरूष संग्राम करते हुए अन्त को प्राप्त हुए। बादशाह ने गढ़ चुर कर दिया। चित्तौड़ इस्लाम के नीचे आ गया।[38] मलिक मुहम्मद जायसी ने यह काव्य रचकर सुनाया। कहां है वह रत्नसेन जो ऐसा राजा था, कहां है वह सुग्गा जो ऐसी बुद्धि लेकर जन्मा था, कहां है वह अलाउद्दीन सुल्तान, कहां है वह राघवचेतन जिसने पद्मिनी का शाह से बखान किया, कहां है वह सुन्दरी रानी पद्मावती कोई

न रहा। संसार मे कहानी भर रह गई। धन्य है वे मनुष्य जिसके यश की कीर्ति है। फूल मर जाता है पर उसकी गंध नही मरती।[39]

किसी ने जगत में यश नही बेचा। किसी ने यष मोल नहीं लिया। अपनी–अपनी करनी से सब उसे खोते और पाते है। जो इस कहानी को पढे वह हमारे लिये दो शब्द स्मरण करे। कवि ने अपने काव्य को भी संक्षेप में दो बोल कहा है। इसमें एक रत्नसेन का बोल है दूसरा पद्मावती का बोल है। सारा काव्य इन्ही दो बोलों की व्याख्या है। रत्न पदारथ बोलइ बोला (23/5)।[40]

केई न जगत जस बैचा केइ न लीन्ह जस मोल।

जो यह पढ़ै कहानी हम संवरे हुई बोल।

यद्यपि पद्मावत में अनेक अस्वाभाविक, असंगत और असंभव प्रसंगो की भरमार है, किन्तु यह भी सत्य है कि इसमें ऐतिहासिक तथ्यों की भी पुश्टि अन्य समसामयिक स्त्रोंतो से होती है, अतः इसका तथ्यपरक अध्ययन अति महत्वपूर्ण हो जाता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जायसी की रचना के सभी पात्र ऐतिहासिक है। रानी पद्मिनी और राजा रत्नसेन (रत्नसिंह) की प्रमाणिकता सिद्ध हो गई है। इस रचना के नायक गोरा बादल के स्मारक उनकी प्रमाणिकता सिद्ध करते है। रानी पद्मिनी का सतीत्व और उस समय किया गया जोहर गोरा–बादल का बलिदान हमारे गौरवमयी इतिहास के साक्षी और धरोहर है।

संदर्भित सूची :–

1. *वासुदेव शरण अग्रवाल– मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्मावत लोक भारती प्रकाशन 2013, पृ. 51–52*
2. *वही, पृ. 56–57*
3. *वही, पृ. 73*
4. *वही, पृ. 96–111*
5. *वही, पृ. 136–141*
6. *वही, पृ. 168–175*
7. *वही, पृ. 261–279*
8. *वही, पृ. 458–472*
9. *वही, पृ. 472–478*
10. *वही, पृ. 484–508*
11. *वही, पृ. 511*
12. *वही, पृ. 513*
13. *वही, पृ. 517*
14. *वही, पृ. 523*
15. *वही, पृ. 527–528*

16. राय– मुसलमानी इतिहासकारो के अनुसार उस समय हिन्दू राजाओं का यही खिताब था। अमीर खुसरो कृत आशिका मे गुजरात, रणथम्भौर, माण्डु तिलंग, मावर देवगिरी के हिन्दु राजाओ को राय कहा गया है। इन्हीं में से बड़े बड़े रायरायन कहलाते थे।
17. वही, पृ. 532
18. वही, पृ. 533
19. वही, पृ. 544
20. वही. पृ. 568–570
21. पांच रत्न समुद्र ने विषेश रूप से उन्हे रत्नसेन को भेंट में दिया था। सोने के पिजडे समेत हंस, अमृत, पारस पत्थर नग तथा सोने की डांडी पर बैठा हुआ सोनहा पक्षी व शार्दूल पक्षी।
22. वहीं, पृ. 604
23. वहीं, पृ. 613
24. वहीं, पृ. 617
25. वहीं, पृ. 625
26. वहीं, पृ. 632
27. वहीं, पृ. 633
28. वहीं, पृ. 651
29. वहीं, पृ. 658–659
30. पद्मावती रत्नसेन को छुड़ाने के लिये अपनी योजना बना चुकी थी। गोरा बादल ने उसमें इतना परिवर्तन कर दिया कि पद्मिनी को न जाने दिया वरन उसके चंडोल में बेड़ी काटने वाले लौहार को बैठाया।
31. वहीं, पृ. 663–664
32. वहीं, पृ. 667–668
33. वहीं, पृ. 676–677
34. वहीं, पृ. 678–679
35. वहीं, पृ. 695
36. वहीं, पृ. 702
37. वहीं, पृ. 707–709
38. वहीं, पृ. 710
39. वहीं, पृ. 713
40. वहीं, पृ. 714